IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 29, Issue 3, Series 2 (March, 2024) 75-78
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

भारत–चीन संबंधों में पैंगोंग त्सो : विवाद और चुनौतियाँ

लाल चन्द मीणा
सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान
एस.बी.डी. राजकीय महाविद्यालय सरदारशहर

सारांश : *पैंगोंग त्सो भारत और चीन की सीमा पर फैली लगभग 14,000 फीट ऊंचाई पर हिमालय में स्थित झील है। इस झील की लंबाई का दो तिहाई भाग चीन में तथा शेष भारत में स्थित है। वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) इस झील के पानी से होकर निकलती है। इसमें यह कहां से गुजरती है, इस बारे में दोनों देशों की अलग–अलग धारणाओं के कारण पैंगोंग त्सो क्षेत्र भारत और चीन के बीच विवाद का विषय रहा है। एलएसी का कभी भी औपचारिक रूप से सीमांकन नहीं किया गया है, जिसके कारण क्षेत्र में सैन्य टकराव होते रहे हैं। मई 2020 में पैंगोंग त्सो क्षेत्र में एलएसी पर भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच तनाव बढ़ गया। तनाव के मद्देनजर भारत और चीन दोनों ने क्षेत्र में अपनी सैन्य उपस्थिति को मजबूत किया। इस दौरान जून 2020 में गलवान घाटी में हिंसक झड़प हुई। जिसमें भारत और चीन दोनों पक्षों के सैनिक मारे गए। दोनों देशों के बीच पिछले 45 वर्षों में यह पहला बड़ा हिंसक टकराव था। इस हिंसक झड़प के बाद भारत–चीन के बीच कूटनीतिक और सैन्य संकट पैदा हो गया। इन घटनाक्रमों के बीच भारत ने इस क्षेत्र में अपनी रणनीतिक स्थिति को मजबूत करने के लिए बुनियादी ढांचे के विकास पर बल दिया। इसके पीछे भारत का उद्देश्य सीमा पर अपनी स्थिति को मजबूत करना तथा अपने क्षेत्रीय दावों की रक्षा करना है। क्षेत्र में स्थिति को शांत करने के लिए भारत और चीन के बीच कई दौर की कूटनीतिक तथा सैन्य स्तरीय बातचीत हुई है। फरवरी 2021 में दोनों पक्ष झील के उत्तरी और दक्षिण तटों से सैनिकों और सैन्य साजोसामान को पीछे हटाने पर सहमत हुए। इस सहमति के तहत चीन ने फिंगर आठ के पूर्व में अपनी सेना को वापस ले लिया और भारत ने फिंगर तीन के पश्चिम में अपने सैनिकों को वापस ले लिया। यद्यपि डिसइंगेजमेंट प्रक्रिया के बावजूद भारत–चीन सीमा पर स्थिति गतिशील बनी हुई है तथा पैंगोंग त्सो क्षेत्र द्विपक्षीय संबंधों की निगरानी व प्रबंधन के लिए केंद्र बिन्दु बना हुआ है। अपने सामरिक महत्त्व के अलावा पैंगोंग त्सो अपनी मनमोहक प्राकृतिक सुंदरता के लिए भी प्रसिद्ध पर्यटन स्थल के रूप में है।*

बीज शब्द : *पैंगोंग त्सो, फिंगर, एलएसी, गलवान, वेई छी, डिसइंगेजमेंट*

पैंगोंग त्सो की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पैंगोंग त्सो पूर्वी लद्दाख में स्थित एक लंबी संकीर्ण, गहरी, एंडोरहिक (भूमि से घिरी) झील है, जो समुद्र तल से 14 हजार फीट से भी ज्यादा ऊंचाई पर स्थित है। झील का निर्माण हिमनदों के पिघलने से हुआ है। खारे पानी की यह झील विश्व की सबसे ऊंचाई पर स्थित झीलों में से एक है। खारे जल के कारण छोटे पेड़–पौधे बहुत कम है। 135 किलोमीटर लंबाई वाली पैंगोंग त्सो का 45 किलोमीटर पश्चिम का क्षेत्र भारत में स्थित है, जबकि 90 किलोमीटर क्षेत्र चीन में पड़ता है। इसका कुल क्षेत्रफल 600 वर्ग किमी. से अधिक है। इस झील की एक महत्वपूर्ण विशेषता जल में कई पहाड़ी उभार है, जिन्हें फिंगर के नाम से पहचाना जाता है। पैंगोंग त्सो के फिंगर्स की कुल संख्या आठ है जो पश्चिम से पूर्व तक संख्या में एक से आठ तक है। भारत ने फिंगर चार तक इस झील को अपने नियंत्रण में रखा है। लेकिन भारत फिंगर आठ तक अपना दावा करता है तथा मानता है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) यहीं से गुजरती है जो चीन की अंतिम सैन्य चौकी रहा है। इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के कारण भारतीय सैनिक ज्यादातर पैदल ही गश्त करते रहे है। लेकिन फिंगर चार से आगे भारतीय सैन्य बलों का सक्रिय नियंत्रण नहीं रहा है। चीन भारत के दावे को स्वीकार नहीं करता है। चीन की धारणा है कि एलएसी फिंगर दो से होकर गुजरती है। वह फिंगर चार तक गश्त करता रहा है और कभी–कभी फिंगर दो तक भी। इस विवाद का कारण भारत और चीन के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखा को लेकर अलग–अलग धारणाएँ है।

संघ शासित प्रदेश लद्दाख में भारत–चीन के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) है। एलएसी वास्तव में 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद अनौपचारिक युद्ध विराम रेखा थी। वर्ष 1993 में दोनों देशों द्वारा एक द्विपक्षीय समझौते के तहत इसे वास्तविक नियंत्रण रेखा के रूप में स्वीकार कर लिया गया। परंतु दोनों देश जहां दावा करते हैं वह सीमा अभी भी अलग–अलग है। इस कारण इस इलाके में समय–समय पर विवाद उत्पन्न होते रहे हैं। एलएसी केवल जमीन से होकर ही नहीं गुजरती बल्कि यह पैंगोंग झील से भी गुजरती है।[1]

पैंगोंग त्सो का भारत के लिए रणनीतिक महत्व

चुशूल घाटी के नजदीक होने के कारण यह झील रणनीतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र 1962 में भारत–चीन युद्ध के मैदान में से एक था। चीन चुशूल घाटी पर नजर रखने के लिए भारत को इस इलाके में कमजोर कर रणनीतिक लाभ उठाना चाहता है। चीन नहीं चाहता कि भारत वास्तविक नियंत्रण रेखा के पास बुनियादी ढांचे को मजबूत करें। उसे लगता है कि अगर इस क्षेत्र में भारत मजबूत होता है तो अक्साई चिन और ल्हासा काशगर राजमार्ग पर खतरा हो सकता है। ल्हासा काशगर मार्ग 'तिब्बत' और 'झिंजियांग' को जोड़ता है। यह खतरा केवल चीन तक ही नहीं बल्कि लद्दाख और जम्मू कश्मीर में पाकिस्तान के कब्जे वाले क्षेत्रों तक हो सकता है।[2]

पैंगोंग त्सो को लद्दाखी लोकाचार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। यही कारण है कि जब चीनी सेना इस क्षेत्र में घुसपैठ करती है तो स्थानीयवासी भी चीनी सेना के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करते हैं। डेमचक और चुशूल जैसे क्षेत्रों में चीन द्वारा समय–समय पर बहुत सारी भूमि पर अतिक्रमण किया जाता रहा है। पूर्व भारतीय राजनयिक फुंचोक स्टोबदान का मानना है कि यद्यपि पैंगोंग त्सो झील के इतिहास पर बहुत कम विद्वानों ने शोध किया है, लेकिन यह लद्दाख के लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण जगह है। यहां सेंधा नमक का उत्पादन होता है जिसका स्थानीय स्तर पर उपभोग के बाद निर्यात भी किया जाता है। भारत और चीन में विभाजित हो जाने के कारण इस झील की स्थिति के बारे में भी कम जानकारी है। सैन्यीकरण का प्रभाव भी पैंगोंग त्सो की पारिस्थितिकी पर पड़ा है। क्योंकि झील के चारों तरफ भारी किलेबंदी है। झील के सभी ढलानों पर सेना के बंकर है जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हैं।[3]

लद्दाख में सैन्य गतिरोध की शुरुआत

चीनी पीपल्स लिबरेशन आर्मी की बड़ी घुसपैठ के पहले एक व्हिसल ब्लोअर ने अपनी रिपोर्ट में पांच हजार से भी अधिक चीनी सैनिकों के लद्दाख में घुसने की बात उजागर की थी तथा अपनी रिपोर्ट में दावा किया कि इन सैनिकों ने गलवान के चार बिंदुओं तथा पैंगोंग त्सो के उत्तरी किनारे पर भारतीय जमीन पर कब्जा कर लिया है। एलएसी के आसपास होने वाली अतिक्रमण की घटनाओं पर प्रायः यह कहा जाता है कि एलएसी के बारे में भारत और चीन की अवधारणा में फर्क है। दोनों देशों की सेनाएं अपने दावे वाले क्षेत्रों में गश्त करती है। कभी–कभी दोनों पक्षों के गश्ती दलों का आमना सामना भी हो जाता है। ऐसी घटनाओं का दोनों देशों के बीच सीमा पर शांति के लिए तय समझौता के आधार पर समाधान निकाल लिया जाता है।[4]

मई–जून 2020 की चीनी करवाई शांति के समझौते की शर्तों को पार कर गई। चीन की तरफ से मोर्चों पर बंकर बनाने, सड़कों का निर्माण तथा अन्य स्थायी निर्माण शुरू कर दिया गया था। गलवान घाटी में चीनी सैनिक उस जगह से भी आगे पहुंच गए थे, जिसे चीन अपनी नियंत्रण रेखा बताता रहा है। यह स्पष्ट रूप से यथास्थिति का उल्लंघन तथा वास्तविक नियंत्रण रेखा को बदलने की चाल थी। गलवान नदी के उस पार चीन की सेना द्वारा पेट्रोलिंग पॉइंट 14 से गोगरा हॉट स्प्रिंग तक सैंकड़ों टेंट लगा दिए गए। लद्दाख के पूर्वी इलाके में स्थित पैंगोंग त्सो के उत्तरी किनारों पर भारत तथा चीन के सैनिकों के बीच तनावपूर्ण स्थिति बन गई। यहां वर्ष 2017 में हुए डोकलाम तनाव जैसी स्थिति बन गई। झील के उत्तरी तट पर 5–6 मई 2020 को कई घंटे तक दोनों देशों की सेनाओं के बीच तनातनी रही। इस दौरान चीन के सैनिकों ने पथराव भी किया। भारतीय सैनिकों ने भी जवाबी कार्रवाई की। जिससे दोनों पक्षों के सैनिक घायल हुए। यद्यपि सेना के अनुसार पैंगोंग त्सो पर 6 मई को तनातनी खत्म हो गई। परंतु बाद की घटनाओं से स्पष्ट होता है कि वहां चीनी सैनिक डटे रहे। इस स्थिति को देखते हुए भारतीय सैनिकों ने भी अपना मोर्चा नहीं छोड़ा।[5]

चीन ने यहाँ वेई छी नीति अपनाई। वेई छी खेल में शत्रु के कई भू भागों को घेरने का प्रयास किया जाता है ताकि शत्रु का ध्यान बंट जाए। इस स्थिति में जिस भू–भाग को प्राप्त करने का जो लक्ष्य निर्धारित किया जाता है, उसे हासिल करने में आसानी हो जाए। वर्ष 2020 में पूर्वी लद्दाख में चीन द्वारा वेई छी खेल की रणनीति से अपना कब्जा जमाने का इरादा स्पष्ट होता है। चीन पैंगोंग त्सो झील के फिंगर चार से आठ तक के इलाके पर अधिकार करना चाहता था। वेई छी खेल की समर नीति के अनुरूप चीन ने पैंगोंग त्सो के अलावा गलवान घाटी, देपसांग, हॉट स्प्रिंग क्षेत्रों में अपनी सैनिक कार्रवाई की थी। चीन की इस रणनीति से भारत के रणनीतिकारों का ध्यान 15 जून 2020 को गलवान में हुई हिंसक झड़प पर लगा रहा तथा जहां से चीन की सेना वास्तविक नियंत्रण रेखा के पीछे आ गई। दूसरी तरफ पैंगोंग त्सो के फिंगर चार से फिंगर आठ तक के इलाके पर अपनी सैन्य मौजूदगी को और मजबूत करता रहा। यद्यपि 9 फरवरी 2021 को दोनों देशों के बीच हुए एक समझौते के तहत चीन ने इस क्षेत्र को खाली कर दिया है, लेकिन भारतीय सैनिकों को उस क्षेत्र में गश्त नहीं करने देने की बात मनवाने में चीन कामयाब रहा। इस प्रकार यह क्षेत्र दोनों देशों के बीच बफर जोन बन गया है।[6]

चीन द्वारा पैंगोंग त्सो क्षेत्र में की गई इस कार्रवाई के असली मकसद के बारे में विश्लेषक कई कारण गिनाते हैः पहला, जम्मू कश्मीर के नए मानचित्र को लेकर चीन अपना आक्रोश दिखा रहा था। उल्लेखनीय है कि भारत ने 5 अगस्त 2019 को जम्मू कश्मीर के विशेष राज्य का दर्जा समाप्त करके इसके दो संघ शासित क्षेत्र बना दिए गए। इसमें एक संघ शासित प्रदेश लद्दाख भी है। दूसरा, यह भी निष्कर्ष निकाला गया कि उस समय दुनिया भर में कोरोना फैलाने के कलंक से विश्व का ध्यान हटाने के लिए चीन ने इस घटना को अंजाम दिया। तीसरा, यह भी अनुमान लगाया गया है कि चीन के भीतर कम्युनिस्ट पार्टी में उस समय उठा–पटक चल रही थी और अपनी कमजोर होती स्थिति को संभालने के लिए चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग अपने देश का ध्यान सैन्य ताकत की ओर करना चाहते थे। विश्लेषक यह

भी कहते हैं कि भारत की एक सामरिक सड़क भी चीन को परेशान कर रही थी, जो श्योक नदी के पास से होते हुए दौलत बेग ओल्डी (DBO) तक जाती थी। इस सड़क को चीन की सेना अपने जद में लेना चाहती थी।[7] चूंकि इसके आसपास का इलाका चीन के लिए सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है और इस सड़क के बन जाने से इस इलाके पर भारत को रणनीतिक बढ़त मिल रही थी।

गलवान में भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच हिंसक झड़प के 3 वर्ष बाद भी यहां तनाव पूरी तरह शांत नहीं हुआ है। चीन पैंगोंग त्सो के पार उत्तर और दक्षिणी तटों को जोड़ने वाले पुलों का निर्माण कर रहा है। सैटेलाइट तस्वीरों से भी पता चलता है कि चीनी पक्ष की तरफ से मुख्य पुल का निर्माण चल रहा है जबकि एक पुल का निर्माण पूर्ण हो चुका है। उत्तरी तट पर पुल निर्माण के साथ–साथ बड़े स्तर पर अन्य निर्माण गतिविधियां देखी गई है। परिणामस्वरूप दोनों पक्षों के बीच झील के आसपास बुनियादी ढांचे के निर्माण से अविश्वास का वातावरण बना हुआ है। भारत भी इस क्षेत्र में ढांचागत विकास कर रहा है, जिसमें दौलत बेग ओल्डी दर बुक श्योक सड़क जो लेह से दुनिया की सबसे ऊंची हवाई पट्टी दौलत बेग ओल्डी तक यात्रा के समय को कम कर देती है। भारत की इन गतिविधियों को चीन अपने अक्साई चिन पर कब्जे तथा पाकिस्तान के कब्जे वाले क्षेत्र में अपने हितों के लिए खतरे के रूप में देखता है जबकि चीन अपने ढांचागत विकास को अपनी सुरक्षा और संप्रभुता के लिए आवश्यक मानता है। भारत ने पिछले कुछ वर्षों से सीमा सड़क संगठन (BRO) के बजट में भी तेजी से वृद्धि की है। जहां 2022–23 में 3500 करोड रुपए आवंटित किए गए थे, वहीं 2023–24 में बीआरओ का पूंजीगत ढांचा 5000 करोड़ तक कर दिया गया। इस बजट का अधिकांश हिस्सा भारत–चीन सीमा सड़क योजना पर खर्च किया गया है। दरअसल पिछले 3 सालों से सीमा पर बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ बनाने पर जोर दिया जा रहा है। इसलिए बजट लगातार बढ़ रहा है।[8] द्रष्टव्य है कि मई–जून 2020 की गलवान झड़प के बाद से झील के दोनों तटों पर दोनों पक्षों के एक लाख से ज्यादा सैनिक आज भी तैनात है। कोर कमांडर स्तरीय कई वार्ताओं के बावजूद देपसांग और डेमचोक में गतिरोध बना हुआ है। इन दोनों स्थलों पर चीनी सेना भारतीय सैन्य बलों की गश्त को रोकती रही है।

पैंगोंग त्सो से सैनिकों की वापसी का समझौता

लद्दाख में एलएसी पर मई–जून 2020 से चले आ रहे सैन्य गतिरोध को हल करने के लिए भारत और चीन के बीच 24 जनवरी 2021 को कोर कमांडर स्तरीय वार्ता हुई। इस बैठक में बातचीत के अनुरूप पैंगोंग त्सो के उत्तरी तथा दक्षिणी तटों पर से चीनी और भारतीय सैनिकों को वापस बुलाने पर सहमति बनी। चीन की सरकार ने 10 फरवरी 2021 को इसकी घोषणा की थी। भारत में इस मसले पर विवाद भी देखने को मिला। विपक्षी दलों ने इसे भारत द्वारा चीन के समक्ष आत्म समर्पण का आरोप लगाया। सैनिकों की वापसी के समझौते में यह सहमति बनी थी कि चीन अपनी सेना को पैंगोंग त्सो के उत्तरी किनारे से फिंगर आठ में पूर्व की ओर रखेगा। इसी प्रकार भारत भी अपने सैन्य बलों को फिंगर तीन के पास अपने स्थाई बेस धनसिंह थापा पोस्ट पर रखेगा। ऐसी ही कार्रवाई झील के दक्षिणी तट इलाके में भी दोनों देशों द्वारा की जाएगी। इस समझौते में यह भी तय किया गया कि दोनों पक्ष उत्तरी किनारे पर अपनी सेना की पेट्रोलिंग को अस्थायी तौर पर स्थगित रखेंगे। भारतीय रक्षा मंत्री ने संसद में कहा कि अभी भी वास्तविक नियंत्रण रेखा पर गश्त को लेकर कुछ मामले सुलझाने बाकी है। इसे भविष्य में होने वाली वार्ताओं में समाधान निकालने का प्रयास किया जाएगा और द्विपक्षीय समझौते तथा प्रोटोकॉल के माध्यम से जल्द ही पूर्ण विसैन्यीकरण कर लिया जाएगा।[9]

निष्कर्ष :

सीमांत क्षेत्रों में बढ़ती चीन की आक्रामक गतिविधियां भारत के लिए रणनीतिक खतरा पैदा कर रही है और चीन द्वारा शक्ति संतुलन को बदलने से भारत की क्षेत्रीय अखंडता को कमजोर होने का खतरा बढ़ा है। इसके अतिरिक्त चीनी सेना द्वारा बार–बार सीमा उल्लंघन के मामलों से क्षेत्रीय स्थिरता खतरे में पड़ सकती है। दोनों देशों के बीच अन्य क्षेत्रों में भी संबंधों पर विपरीत असर पड़ा है। पैंगोंग त्सो और इसके आसपास के अन्य इलाकों में चीन के अविश्वसनीय क्षेत्रीय दावे भारत की सुरक्षा चिंता को और बढ़ाते है। चीन के ये दावे विद्यमान अंतरराष्ट्रीय मानदंडो तथा क्षेत्र पर भारत के ऐतिहासिक अधिकारों का खंडन करते हैं। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए भारत के लिए यह जरूरी है कि वह अपने हितों की रक्षा करने और क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने के लिए राजनयिक और सैन्य स्तर पर एक व्यापक रणनीति अपनाएं ताकि चीन से मुकाबला किया जा सके।

पैंगोंग त्सो विवाद पर अपने मतभेदों के हल के लिए दोनों देशों द्वारा एक शांतिपूर्ण तथा पारस्परिक रूप से स्वीकार्य तरीका खोजने का प्रयास करना चाहिए। अपने द्विपक्षीय संबंधों में शांति, स्थिरता और बातचीत बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है। दुनिया के दो सबसे अधिक आबादी वाले देश भारत और चीन के संबंधों में बहुत कुछ दांव पर है जो न केवल उनके अपने हितों को प्रभावित करते हैं बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों को भी प्रभावित करते हैं। जून 2020 के गलवान गतिरोध ने भारत के लिए अपनी सैन्य, राजनीतिक तथा कूटनीतिक रणनीतियों का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए उत्प्रेरक का काम किया है। इस घटना ने भारत को अपनी सीमाओं तथा भू राजनीतिक हितों की सुरक्षा के लिए सक्रिय रहने की सीख दी है। भारत का लक्ष्य क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ाने, सीमांत क्षेत्रों में आधारभूत ढांचे के विकास में

तेजी लाने, रक्षा तैयारियों को बढ़ाने, सामरिक प्रशिक्षण, खुफिया जानकारी को और मजबूत करने तथा सीमावर्ती समुदायों के साथ जुड़कर अपनी स्थिति को मजबूत करने का होना चाहिए।

संदर्भ

1. इंडियन एक्सप्रेस, नई दिल्ली, 6 सितंबर 2020
2. बीबीसी, 21 फरवरी 2021
3. द प्रिंट, 15 जून 2020
4. मुकेश कौशिक, भारत–चीन एलएसी टकराव (इनसाइड स्टोरी) प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ 30
5. मुकेश कौशिक, भारत–चीन एलएसी टकराव (इनसाइड स्टोरी) प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ 32
6. रंजीत कुमार, भारत–चीन रिश्तेः ड्रैगन ने हाथी को क्यों डसा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ 31
7. मुकेश कौशिक, भारत–चीन एलएसी टकराव (इनसाइड स्टोरी) प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ 33
8. द हिंदू, 2 जुलाई 2023
9. रंजीत कुमार, भारत–चीन रिश्तेः ड्रैगन ने हाथी को क्यों डसा, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ 206